Drishtikon*(Bimonthly Hindi Journal)*

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-6
November-December-2019

भक्ति आन्दोलन एवम् समरसता

प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी[1], अभिषेक चारण[2]

[1]निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)

[2]सहायक आचार्य (हिन्दी), जैन विश्व भारती संस्थान, (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)

आलेख सार

भक्ति आन्दोलन जिन परिस्थितियों में आरम्भ हुआ उसका प्रथम उद्देश्य तमाम तरह के विभेदों को मिटाकर समता मूलक समाज की रचना करना था। तत्कालीन समाज छुआछूत और ऊँच नीच जैसी तमाम बुराइयों से आक्रान्त था इन बुराइयों से मुक्ति के लिए एक ऐसे आन्दोलन की जरूरत थी जो सामुदायिक संरचना में समूल परिवर्तन का पुरोधा बन सके।

भक्ति आन्दोलन तमाम के तमाम सुधारवादी सन्तों ने एक स्वर से ना केवल खोखले कर्म-काण्डों और धर्म की आड़ में जारी पाखण्डों का विरोध किया अपितु जाति-पांति वर्ग भेद और वर्ण भेद की मानसिकता में जकड़े समाज को सौहार्द और सहिष्णुता से परिपूर्ण एक नवीन जीवन दृष्टि दी। एक ऐसी जीवन दृष्टि जिसमें म्लैच्छ और विधर्मियों तक के लिए भी कहीं कोई घृणा नहीं-नफरत नहीं थी।

कुल मिलाकर यह समग्र आन्दोलन ना केवल भारतीय धर्म और समाज बल्कि समग्र सृष्टि के लिए नया विहान लेकर आया। धर्म के नाम पर चली आ रही बरसों पुरानी भ्रान्त धारणाओं के स्थान पर युगानुकूल और तर्क सम्मत अवधारणाओं की स्थापना इस पूरे आन्दोलन की महानतम उपलब्धियों में से है।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-6
November-December-2019

मुख्य शब्दावली

1.सूफी सम्प्रदाय- मुस्लिम संत कवियों द्वारा प्रवर्तित एक सम्प्रदाय जिसके अनुयायी सूफ (ऊन) से बने कपड़े पहनते थे।

2.भक्ति आन्दोलन- 1375 से 1700 तक के काल खण्ड में कतिपय सन्त कवियों द्वारा प्रवर्तित एक पूर्णतया मानवीय और व्यापक आन्दोलन।

3.सगुण भक्तिधारा- यह भक्ति धारा ईश्वर के साकार रूप की उपासक थी।

4.निर्गुण भक्तिधारा-यह ईश्वर के निराकार स्वरूप की आराधक थी।

5.एकेश्वरवाद- एक ईश्वर की उपासना करने वाली विचारधारा।

प्रस्तावना

भक्ति आन्दोलन का काल विद्वानों ने 1375 से 1700 विक्रमी सम्वत् तक माना है। इस काल खण्ड में भक्त कवियों ने कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी बहाते हुए जो अमर काव्य रचनाएं कीं वे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। कर्म, ज्ञान और भक्ति का सामंजस्य ही वस्तुतः धर्म का प्राण तत्व है और इन्हीं तीनों की मौजूदगी में ही धर्म गतिशील रहता है। कर्म के बिना ज्ञान निरा वाग्जाल है तो ज्ञान के बिना भक्ति अँधेरे में तीर चलाने का उपक्रम भर होकर रह जाती है वहीं भक्ति के बिना कर्म और ज्ञान दोनों ही अप्रासंगिक हो जाते हैं। कुल मिलाकर इन तीनों का सामंजस्य ही हमें एक सन्तुलित जीवन दर्शन की ओर प्रवत्त करता है जो प्राणि मात्र के लिए श्रेयष्कर है।

इस आन्दोलन के आधार स्तम्भ कहे जाने वाले विभिन्न सम्प्रदायों में श्री संप्रदाय, ब्रम्ह संप्रदाय, रूद्र संप्रदाय और सनकादि संप्रदाय प्रमुख है। इन्हीं के समानन्तर एक अलग तरह का सम्प्रदाय भी विकसित हुआ जिसे सूफी सम्प्रदाय के नाम से जाना गया। चूंकि भक्ति आन्दोलन पूर्णतया मानवीय और व्यापक आन्दोलन था इसलिए इसमें हिन्दू-मुस्लिम या तथाकथित ऊँच-नीच या बड़े छोटे की संकुचित मानसिकता के लिए कहीं कोई जगह नहीं थी। सवर्ण- अछूत जैसी धारणाओं को खंडित करना तो इस आन्दोलन का जैसे मुख्य उद्देश्य ही था तभी तो गुरू नानक सरीखे सन्तों ने लिखा -

Copyright©authors